श्वयथु चिकित्सा

Vd. Pallavi Yeshwantrao Patil

MD (Ayu.) (Samhita)
Dip. In Manuscriptolgoy
PhD (Ayu.) (Samhita) (Scholar)
Assistant Professor, Dept. of Samhita Siddhanta
MAM's SSAM, Hadapsar, Pune – 28

क्षतक्षीण पश्चात् अध्याय वर्णन
कारण सामान्य - आघात

उत्सेधं संहतं शोफं तमाहुं निचयादतः।
(मा. नि)

शोथ-स्थानवृद्धी

प्रकार

दोष अनुसार - 3
वातज
पित्तज
कफज

एकाङ्ग
सर्वाङ्ग

निज
अनिज(आगन्तु)

निज शोथ भेद-
सर्वगात्र
अर्धगात्र
अवयवाश्रित

निजशोथ -हेतु

शुद्धी, आमय, अभक्त इ. कृश,

अबलव्यक्ती

क्षार

अम्ल

तीक्ष्ण

उष्ण

गुरु

दधि

मृतिका

आम अन्न

विरोधी अन्न

दुष्ट अन्न

गरोपसृष्ट अन्न

इतर हेतु-

अर्श

अचेष्टा

न च देहशुद्धि

मर्मोपघात

विषमा प्रसूति

मिथ्योपचार

प्रतिकर्मणां

आगन्तु शोथ हेतु-

काष्ठ

अश्म

शस्त्र

अग्नि

विष

अयसादि

इ. नी आघात

शोथ संप्राप्ति-

बाह्याः सिराः प्राप्य यदा कफासृपित्तानि सन्दूषयतीह वायुः ।
तैर्बद्धमार्गः स तदा विसर्पन्नुत्सेधलिङ्गं श्वयथुं करोति ॥

दोष संचारानुसार शोथ संप्राप्ति

१) उरः- उध्र्व काय शोथ
२) पक्वाशयादि- अधोकाय शोथ
३) मध्यभाग- मध्यकाय
४) सर्वाङ्गगग- सर्वाङ्ग शोध
५) स्थानिक अवयव -अवयव शोथ नासाशोथ, कर्णशोथ इ.

पूर्वरुप- उष्मा, दवथु, सिराणाम् आयाम

सामान्य लक्षण-

गौरव
अनवस्थितत्त्व
उत्सेध
उष्मा
सिरातनुत्व
लोमहर्ष
अङ्गविवर्णता

वातज शोथ-

चल
तनुत्वक्
परुष
अरुण, असित
अनिमित्त प्रसुप्ति,
हर्ष, अर्ति
प्रोन्नमति प्रपीडितो
दिवा बली

पित्तज शोथ

मृदु
सगन्ध
असित, पीत, रागवान
भ्रमज्वरस्वेदमदान्वित
उष्यते
स्पर्शरूग
अक्षिराग
भृशदाहपाकवान

कफज शोथ-

गुरु
स्थिर
पाण्डुर
अरोचक
प्रसेक
निद्रा
वमि
वन्हिमान्द्य
कृच्छ्रजन्मप्रशम
नीपीडितो न चोन्नमेद
रात्रिबली

असाध्य लक्षण -

कुश अबल व्यक्ती
वमनादि उपद्रवयुक्त शोथ
मर्मानुगत
राजिमान
परिस्रवेद
हीनबलस्य
सर्वगः

साध्य लक्षण -

अहीनमांस
नव
बलस्थ

चिकित्सा-

निदानदोषर्तुविपर्ययक्रमैरुपाचरेत्तं
बलदोषकालवित् ।

आमज- लंघन पाचन क्रम
उल्बणदोषावस्था - शोधन
शिरोगत- शिर्षविरेचन
अधोभागस्थित- विरेचन
उर्ध्वभागस्थित- वमन
स्निग्ध कारणात्- रुक्षण प्रयोग
रुक्षाधिक्य-स्निग्ध प्रयोग
वात+, विबन्ध- निरुह
पित + वात- तिक्त सिद्ध घृत
मूर्च्छा, अरति, दाह तृष्णा-तिक्त द्रव्य सिद्ध
विशोधन- दुग्ध + गोमूत्र
कफोत्थित-क्षार / कटूष्ण संयुत द्रव्य
मूत्र, तक्रासव युक्तिपूर्वक प्रयोग

अपथ्य-

- ग्राम्य, आनूप, जलीय मांस
- अबल
- शुष्क शाक
- नवान्न
- गौड
- पिष्टान्न
- दधि
- तिलकृत
- विज्जल
- मद्य

- अम्ल
- धाना
- वल्लूर
- समशन
- गुरु
- असात्म्य
- विदाही
- दिवास्वाप
- व्यवाय

क़फज शोथ चिकित्सा-

१)शुंठी, मरीच,पिप्पली,त्रिवृत,कुटकी
+ लोहभस्म
त्रिफलाक्वाथासह

२) गोमूत्र + हरीतकी योग

हरीतक्यादि योग- त्रिदोषज

वातज शोथ- चिकित्सा

पुनर्नवा,नागर,मुस्ता १अक्ष मात्रा
+१ प्रस्थ दुग्ध

मयूरक (अपामार्ग), मागधिका(पिप्पली)
मागधिका समूलां (पिप्पली मूल)
१अक्ष मात्रा
+१ प्रस्थ दुग्ध

दुग्धाहार-

भोजनवारिवर्जी
केवल उष्ट्र दुग्ध पान
काल- १ सप्ताह/१मास

गोदुग्ध+गोमूत्र
माहिषदुग्ध + गोमूत्र

आहाररूपी- गोदुग्ध
औषधरूपी-गोमूत्र

शोथातिसार चिकित्सा-

गुरुभिन्नवर्च- त्रिकटु + सौवर्चल + मधु युक्त तक्र.
सदोष भिन्न आमवर्चस- गुडहरीतकी / गुडनागर योग

विबन्ध चिकित्सा-
विड्वातसङ्ग- प्राग्भक्त- दुग्ध/मांसरस +एरण्ड तेल

स्त्रोतोविबन्ध
अग्निनाश
अरुचि
-सुजात मद्य/अरीष्ट

अरिष्ट-

गण्डीराद्यरिष्ट
अष्टशत अरिष्ट
पुनर्नवाद्यरिष्ट
फलत्रिकाद्यरिष्ट

+ अर्श व पाण्डुरोगोक्त अरिष्ट

अन्य योग-

कृष्णादि चूर्ण
क्षारगुटिका
गुडार्द्रक प्रयोग
आर्द्रक स्वरस प्रयोग
शिलाजतु प्रयोग
कंसहरीतकी
पटोलमूलादि कषाय
चित्रकादि घृत
द्वितीय चित्रकादि घृत
चित्रक घृत

यवागू -

जीवन्त्यादि
पञ्चकोल

पथ्य-

पिप्पली सिद्‌ध कुलत्थ यूष
त्रिकटू व यावशूक सिदध मुद्‌ग यूष
विष्किर पक्षी व जांगल मांसरस
कूर्म गोधा, शिखि, शल्लक मांसरस

शाकार्थि-

सुवर्चला, गृञ्जनक, पटोल, वायसी,मूलक, वेत्र, निम्ब
पुराण यव+शालि

बाहय चिकित्सा-

वातज शोथ-

स्नेह योग, प्रदेह, परिसेचन, स्वेद
शैलेयादि तैल व प्रदेह

स्वेदन-वासा, अर्क, करञ्जादि द्रव्य पत्र सिद्‌ध जल- बाष्पस्वेद
रवितप्ततोय -स्नान
गन्ध द्रव्य अनुलेपन

पित्तज शोथ-

वेतस
क्षीर वृक्ष त्वक
मञ्जिष्ठा
कमल
चन्दन इ. सिद्ध तैल व प्रदेह

रविप्रतप्त जल +श्वेतचन्दन, पदमकाष्ठ द्रव्य/दुग्ध + जल- स्नानार्थ

पश्चात् चन्दनलेप

कफज शोथ-

प्रलेप द्रव्य - पिप्पली, सिकता, पुराण पिण्याक, शिग्रु त्वक,उमा

स्नानार्थ - गोमूत्र +कुलत्थ + शुण्ठीजल पश्चात चण्डा (चोरपुष्पी) + अगुरु अनुलेप

अरिष्ट लक्षणे- तन्द्रादाहारुचिच्छर्दिमूर्च्छाध्मानातिसारवान् । अनेकोपद्रवयुतः पादाभ्यां प्रसृतो नरम् ।।
नारीं शोफो मुखाद्धन्ति कुक्षिगुह्ययादुभावपि । राजीचितः स्रवंश्छर्दिज्वरश्वासातिसारिणम्।।

ज्वरातिसारौ शोफान्ते श्वयथुर्वा तयोः क्षये । दुर्बलस्य विशेषेण जायन्तेऽन्ताय देहिनः ।।
वा.शा. ५-९४

श्वयथुर्यस्य पादस्थः परिस्रस्ते च पिण्डिके। सीदतः सक्थिनी चैव तं भिषक परिवर्जयेत् ॥

वा. शा. ५-९५

आननं हस्तपादं च विशेषाद्यस्य शुष्यतः । शूयते वा विना देहात्स मासाद्याति पञ्चताम्।।

वा. शा. ५-९६

स्थान आदि भेदानुसार असंख्य शोथ-

स्थान भेद

दूष्य भेद

आकार भेद

नाम भेद इत्यादि

शिर: शोथ -

दोषास्त्रयः स्वैः कुपिता निदानैः कुर्वन्ति शोफं शिरसः सुघोरम्।

शालूक-
अन्तर्गले घुर्घुरिकान्वितं च शालूकमुच्छ्वासनिरोधकारि |

स्थान- गल

लक्षण - घुर्घुरिकान्वितं उच्छ्वासनिरोध

सुश्रुत
कण्ठशालूक - शस्त्रकर्मसाध्य,
कोलास्थिमात्र कफसंभव
कंटकशूकभूत

विडालिका-
गलस्य सन्धौ चिबुके गले च सदाहराग: श्वसनासु चोग्रः |
शोथो भृशार्तिस्तु विडालिका स्याद धन्याद्गले चेद्वलयीकृता सा||

स्थान - गलसन्धि, चिबुक, श्वासपथ सदाह भृशार्ति

वलयाकृती- मारक

सुश्रुत - वलय
कफप्रकोप
आयताकृति, उन्नत शोफ
अन्नगति निवार्य
असाध्य
विवर्जनीय

मारक

तालुविद्रधि -

दोष- त्रिदोष
स्थान - तालु
दाह, राग, पाक युक्त शोथ.

उपजिह्विका -
दोष-कफ
जिह्वोपरिष्टादुपजिह्विका स्यात् ।
अधस्तादधिजिह्विका च।

सुश्रुत-
अधिजिह्वा-

दोष - कफ, रक्त
स्थान - जिह्वामूल
पक्व झाल्यास असाध्य
उपजिह्वा - जिभेच्या खाली

उपकुश-

दोष - रक्त, पित्त
स्थान- दन्तमांस
पाकोत्पत्ती

दन्तविद्रधि
दोष - कफ + रक्त
स्थान- दन्तमांस
कफशोणितसञ्चय

गलगण्ड-गण्डमाला

गलस्य पार्श्वे गलगण्ड एकः स्याद् गण्डमाला बहुभिश्च गण्डैः।

गलगण्ड- गलस्यपार्श्व
एकाच बाजूने शोध
गण्डमाला- बहुभिश्च

साध्यासाध्यता-
साध्य व्याधी
पीनसपार्श्वशूलकासज्वरच्छर्दियुक्त-
असाध्य

चिकित्सा-

सिरावेध

कायविरेक

शिरोविरेक

धूमपान

पुराणघृतपान

लंघन

प्रघर्षण

कवलग्रह

ग्रन्थि शोथ-

त्रिदोष प्रकोप .

सिराविकारातून उत्पन्न ग्रंथि- स्फुरण

मांसदुष्टी- महान, अनर्ति

मेदोभव- स्निग्धतम, चल

चिकित्सा-

संशोधन

स्वेदन

अपक्व ग्रन्थि-अश्म, काष्ठ, अंगुष्ठ, दण्ड इ.च्या सहाय्याने विलयन

पक्व ग्रन्थि- शस्त्रेण विपाटय, सकोश उद्धृत्य, दहन

व्रणवत चिकित्सा

शेष-शनैः विवृद्ध

पाक,क्षतजन्य विसर्प

विसर्प व व्रणवद चिकित्सा

असाध्य ग्रन्थि-

कुक्षि, उदर, गल, मर्मगत ग्रन्थि
स्थूल, खरग्रन्थि
बाल, स्थविर, अबल

अर्बुद -

चरक - अर्बुद लक्षण नाही सांगितले स्थान, हेतु, आकृति, दोष, दूष्य साम्य ग्रान्थिवत् चिकित्सा

"गात्रप्रदेशे क्वचिदेव दोषाः संमूर्च्छिताः मांसमभिप्रदूष्य ॥ वृत्तं स्थिरं मंदरुजं महांतमनल्पमूलं चिरवृध्दयपाकम् ।। कुर्वंति मांसोपचयं तु शोफं तमर्बुदं शास्त्रविदो वदंति ॥" सु. नि. ११/१३

प्रकार-६

१) वातज
२) पित्तज
३) कफज
४) रक्तज
५) मांसज
६) मेदोज

अलजी -

ताम्र वर्णी पिडका

सशूल पिडका

परिस्रुताग्रा

दहति त्वचमुत्थाने तृष्णमोहज्वरप्रदा । विसर्पत्यनिशं दुःखाददह्त्यग्निरिवालजी ।।

(च. सू. १७/८८)

सु - रक्ता सिता स्फोटवती भवेत् ।

मांसास्रदूषी-

शोफोऽक्षतश्चर्मनखान्तरे स्यान्मांसाम्रदूषी भृशशीघ्रपाक: ॥

विदारिका-
वर्तिवत्, निरर्ति, कठीण आयताकार
स्थान- वंक्षण, कक्षा
दोष- कफ, वात

चिकित्सा-
यथादोष उपक्रम
विस्रावण- सर्वप्रथम
उपनाह
व्रणवत् चिकित्सा

विस्फोटक-

सर्वशरीरगत स्फोट
सदाहज्वरतर्षयुक्त

कक्षा-
दोष- पित्त, वात
यज्ञोपवीत प्रतिमा
प्रभूता

पित्तज पिडका-
स्थूल अणू मध्य आकार

रोमान्तिका-
सर्वांग क्षुद्र पिडका
सज्वरदाहतृष्णा
सकण्डू
अरुचि,प्रसेकयुक्त

दोष- पित्तकफ

मसूरिका-

मसूराकार सर्वगात्र पिडका
दोष- पित्तकफ

विसर्प व कुष्ठ वत् चिकित्सा

ब्रध्न-
वातादि दोष प्रकोप
अन्त्र अण्डकोषामधे प्रविष्ट

मूत्रज वृद्धि-
मूत्रपूर्ण अण्डकोष
मृदु स्पर्श

मेदोज वृद्धि-
मेदपूर्ण वृद्धि स्निग्ध, कठीन स्पर्श

ब्रध्न व वृदि्ध चिकित्सा-

विरेचन
निरूह बस्ति
अभ्यङ्ग, लेप

पक्व व्रणवत चिकित्सा

भगन्दर-

हेतु -
क्रिमी
अस्थि (सूक्ष्म)क्षणन
व्यवाय
प्रवाहण
उत्कटासन
अश्वपृष्ठ

पिडकोत्पत्ती पक्व- भेदन
स्थान-
गुदस्य पार्श्व
ते तु भगगुदबस्तिप्रदेशदारणाच्च भगन्दरा इत्युच्यन्ते | अपक्वा: पिडका:, पक्वास्तु भगन्दरा: | सुश्रुत

गुदगत नाडीव्रण- भगन्दर

चिकित्सा-

विरेचन
एषण
पाटन
विशुद्धी (मार्ग) - औषधी प्रयोग
तप्ततैल दाह
क्षारसूत्र - भेदन
व्रण समान चिकित्सा

श्लीपद -
शिलावत् पदं श्लीपदम्
दोष- मांसकफअस्र
स्थान - जङ्घा, पिण्डी, प्रपदोपरिष्ट

चिकित्सा-
सिरावेध
कफघ्न
सर्षपलेपन

माधवनिदान-
यः सज्वरो वङ्क्षणजो भृशार्तिः शोथो नृणां पादगतः क्रमेण । तच्छ्लीपदं स्यात् करकर्णनेत्रशिश्नौष्ठनासास्वपि केचिदाहुः ।।

जालकगर्दभ-
दोष - मन्दास्तु पित्तप्रबला
तनु, रक्तपायुक्त शोथ
ज्वर, तर्ष
विसर्पण

चिकित्सा-
लंघन
रक्तमोक्षण
विरुक्षणं
कायविशोधन
धात्री प्रयोग
शिशिर प्रदेह

एवंविधांश्चाप्यपरान् परीक्ष्य शोथप्रकारानिलादिलिङ्गैः।
शान्तिं नयेद् दोषहरैर्यथास्वमालेपनच्छेदनभेददाहैः ।।

आगन्तु शोथ चिकित्सा -

आघात

वायु + रक्त

वातघ्न, रक्तनुत चिकित्सा

विषज शोथ - विषघ्न

Thank You!